* ओ३म् *

ओंकार अमृत भजनसंग्रह

अर्थात्

ओंकार भजनावली

लेखक तथा संग्रहकर्ता—

पण्डित ओंकारलाल शर्मा भजनोपदेशक

आर्यप्रतिनिधि सभा, राजस्थान

प्रकाशक—

ज्वालाप्रसाद वर्मा,

आर्य पुस्तकालय, आगरा।

प्रथमवार

मूल्य =)॥

हर्ष-समाचार

पाठकों को यह सूचना करते हुये अति हर्ष होता है कि हमारे राजस्थान के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्रीमान् ओंकारलालजी ने कई बार प्रार्थना करने पर यह पुस्तक प्रकाशित करने की योजना की इसके अन्तर्गत राजस्थान के प्रसिद्ध कविवर श्रीमान् पण्डित भूरालालजी कथा व्यासजी शाहपुरा की अति सुन्दर ललित-कविताओं को आप पढ़ेंगे तो मुग्ध हो जायंगे राजस्थान में कौन ऐसा व्यक्ति है जो आपको न जानता है। पर उनकी तो कविता और हमारे महाशयजी का गान तो मानों सोने में सुगन्ध सा दृष्य है आप भजनोपदेशक तो हैं ही पर साथ ही में संगीत के भी अति मर्मज्ञ हैं।

आप पहले श्रीमान् पण्डित प्रकाशचन्द्रजी के साथ साथ रहा करते थे पर उनकी कृपा और श्रीमान् व्यासजी महाराज के परम उत्साह बढ़ाने पर आपने अल्प समय में बड़ी उन्नति की।

इसलिये पाठकों से प्रार्थना है कि इस भजन पुस्तक को विशेष रूप से अपनाकर इनके उत्साह और साहस को बढ़ायंगे।

विनीत—

पन्नालाल आर्य, भजनीक राजस्थान, अजमेर।

समर्पण

यह भजन पुस्तक अपने परम पूज्यवर राजस्थान के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्रीमान् पण्डित प्रकाशचन्द्रजी को सादर समर्पण करता हूँ जिनकी महान् कृपा से संग्रह रूप एक छोटी सी भजन [illegible] प्रकाशित करने का दुःसाहस किया।

भवदीय—

ओंकारलाल आर्य, भजनोपदेशक

राजस्थान, अजमेर।

* ओ३म् *

ओंकार भजनावली

ईश्वर-प्रार्थना

बागेश्वरी तीन ताल

दीन हीन हम तेरे आये,
राखो लाज हम अति दुख पाये।
प्रेम प्रीती हम सब में समाये,
देखो उर सों द्वेष भगाये ॥१॥
सत्त ही हम बोलें हम सत पर रहें दृढ़,
सत की देश में ध्वजा फहराये ॥२॥
तनिक न हम तुमको बीसरावें प्रभो,
पल पल में हम तुमको धाये ॥३॥
काम क्रोध मद लोभ तजें हम,
तेरे ही नित उठ गुण गाये ॥४॥
छोड़ें सब मिथ्याभिमान
सब मन में तू ओंकार समाये ॥५॥

(द्रोपदी तथा कीचक की कथा)

दोहा

संकट पड़े हजार अरु विपदा कोटि अनेक।
आर्य्य पुत्रि छोड़े नहीं पातिव्रत की टेक॥
आर्य्य पुत्रियां प्राण धन देकर रखतीं लाज।
जिनके पुण्य चरित्र को गाते हैं सब आज॥

(तर्ज़ राधेश्याम)

हम आज द्रोपदी देवी का अति उच्च कथन एक गाते हैं।
किस तरह सती रहती उज्वल और दुष्ट कष्ट ही पाते हैं॥
यह वह प्रसंग है जिस दिन पांचों पाण्डव छल से हार गये।
अज्ञात वास करने को छुप कर नृप विराट् के द्वार गये॥
कंक विप्र के नाम युधिष्ठिर भीम रसोई दार बना।
भाग्य चक्र के मारे अर्जुन बृहन्नला लाचार बना॥
अस्व वेद गायों के रक्षक सहदेव नकुल दोनों भाई।
सैरन्ध्रि के नाम द्रोपदी दासी घर की कहलाई॥
गुप्त रूप रहते थे पाण्डव भेद किसी ने नहिं जाना।
दासी हो रानी की द्रोपदी सेवायें करती नाना॥
यद्यपि विपद से व्याकुल थी वह सती द्रोपदी महारानी।
रूपरम्य थी देह तेज से दिव्य दमकती पेशानी॥
सबला थी पर दासपने से आज बनी अबलासो थी।
किन्तु दिव्य थी द्युति दामनी सुन्दर चन्द्रकला सी थी॥
रूप रंग तप तेज तरुणपन अंग अंग से चूता था।
झलक देख कर पलक न मूंदें ऐसा किस का बूता था॥
नृप विराट का सेना नायक कुत्सित कीचक नामी था।
रानी का भाई होता था क्रूर कुकर्मी कामी था॥
मोहित हुआ देख द्रोपदि के रूप रंग नव योवन को।
काम वाण से पीड़ित होकर हार गया अपने मन को॥
एक समय वह अन्तःपुर में आंख बचा कर रानी से।
सैरन्ध्रि से जाकर बोला बड़ी रसीली बाणी से॥

चौपाई

सैरन्ध्रि सुन्दर सुकुमारी। हुई प्रवल मन आश तुमारी॥
प्रेम विवश मन हार चुकाहूं। सरवस तुमपर वार चुका हूँ॥

हंसकर कंठ लगो गजगामिनि। बनकर रहो भवन ममभामिनि ॥
भोगो विविध भोग सुख सारे। खुले सकल विधि भाग्य तुमारे ॥

(सवैया द्रोपदी का उत्तर)

उस नीच नराधम कीचक के यह बैन पड़े जब कानन में।
कर कोप उठी बदले भ्रकुटी जनु चौंक चली चपला घन में ॥
ललकार कह्यो धिकधिक तुझको धिक बार हजार बड़प्पन में।
हट दूर महामति मन्द अरे शठ जान रह्यो तु कहा मन में ॥

दोहा

कोप करो नहिं कामिनी हरो हृदय की पीर।
व्याकुल हूं तव विरह में, हृदय न धारत धीर ॥

द्रोपदी का उत्तर

रे नीच न ऐसे वचन कह, मुझ अबला को व्यर्थ।
नहिं तो निश्चय होयगो, तेरे लिए अनर्थ ॥

(राग आशा ताल दीपचन्दी)

धुतकार दिया जब द्रोपदि ने, तब कीचक हार चला आया।
दिल की वह चाह किसी ढब से, भगिनी को जाकर समझाया ॥
रानी ने निज भाई के यह, नीच बचन सुन फ़र्माया।
धिक नीच प्रसंग सुनाय मुझको, मनमें नहिं कुछ भी शर्माया ॥
वह दासी है पर देवी है, वह सती सत्य व्रत वाली है।
छेड़ न देना कभी भूल से, डस लेगी नागिन काली है ॥

(दोहा—कीचक फिर कहता है)

सेनापति ने फिर कहे, लाज भरे दुर्बैन।
उसके पाय विना मुझे, नहीं एक पल चैन ॥
किसी बहाने भगिनि तुम इसको युक्ति बनाय।
भवन हमारे भेजदो, करके अतुल उपाय ॥

(तर्ज़ राधेश्याम)

नृप विराट के जन्म दिवस पर उत्सव का अवसर आया।
कर प्रपंच पटरानी ने यों सैरन्ध्रि से फरमाया ॥
दे आओ यह मद्य पात्र मम भ्राता को उसके घर पर।
प्रेम भाव से सन्मुख जाना हुक्म उठाना आंखों पर ॥

(राग आशा ताल चाचर)

न भेजो मुझे स्वामिनी धर्म धारी।
विनय मान लीजे यह थोड़ी हमारी ॥
निरन्तर तुम्हारे चरण की हूँ चेरी।
बचाना धरम है तुमे लाज मेरी ॥
शरण आपड़ी हूँ विपद ग्रस्त नारी ॥१॥
बुरी बुद्धि वाला अनारी अधर्मी।
विषय वासना से घिरा घोर कर्मी ॥
भाई तुम्हारा कुटिल काम चारी ॥२॥
बुरी दृष्टि से वह निहारेगा मुझको।
बुरे शब्द कह कर पुकारेगा मुझको ॥
वहीं प्राण दूंगी टरूंगी न टारी ॥३॥
न भेजो वहां यह विनय मान लीजे।
स्त्रियों के धर्म पर ज़रा ध्यान दीजे ॥
समझलो कि तुमने नरक से उबारी ॥४॥

(रानी क्रोधित होकर कहती है)

दोहा

रानी ने तब यों कहा, भृकुटी कुटिल मरोर।
जायगी झकमार कर, भेजूंगी जिस ठौर ॥
टाल रही है हुक्म को कुटिल काम की चोर।
दासी होकर हो रही तू इतनी मुंह ज़ोर ॥

(द्रोपदी का कीचक के यहां जाना)

तर्ज़ राधेश्याम

रानी के यह शब्द सुने तब द्रोपदी मनमें अकुलाई।
पर सेवा धर्म मर्म के आगे उसकी कुछ नहिं बनआई॥
चली द्रोपदी कीचक के घर रानी का हठ ठान लिया।
आज अवश्य धर्म के बदले मरना उसने ठान लिया॥

(कवित्त)

(उस समय द्रोपदी की दशा)

अति ही अधिर मन द्रगनसों भरे नीर तीर जैसी पीर मार लागी धूम धकि धकि। पड़ी मनु गाज सिर सुन्दरी के मानो आज राखती है लाज चीर खेंच तन ढकि ढकि॥ मनको नंजोर तब कौनसी मरोर मोर देखती है गोर चहु ओर वह तकि तकि॥ करती विचार कर तार कोन पायो पार ज्ञान गयो हार मति जात हाय छकि छकि॥ १॥

सवैया

उस कीचक नीच नराधम को घर ज्यों ज्यों ही पास में आने लग्यो।
भई याद विवाद की बात उसे हिये में मनु तीक्षण बाण लग्यो।
अकुलानि बड़ी मनग्लानि बढ़ी मुख पंकजयों मुरझाने लग्यो।
करतार तू आज उबार मुझे उस भामिनी को इमि ध्यानग्यो॥

दोहा

कीचक के घर बीच जब पहुची द्रोपदी जाय।
आगे बढ़ कीचक कहो पुलकित मुख मुसकाय॥

(कीचक का प्रसन्न होना)

शेर

है धन्य मेरा धाम जो तू आज पधारी ।
छाती पै लूं विठाय तुझे प्राण की प्यारी ॥
लेलूं में बलाएं अरी कुछ पास तो आओ ।
बस हो चुके सब स्वांग लो परदे को उठाओ ॥
चातक की चाह जानकर दो बूंद पिलाओ ।
आशालता की डार में कुछ फूल खिलाओ ॥
आजाओ मिलो प्रेम से अब देर क्या करना ।
बेवस हुआ है कैद उसे जेर क्या करना ॥
मुद्दत के बाद खुल गईं क़िसमत यह हमारी ॥१॥

(द्रोपदी का उत्तर)

कवित्त

सुनके यह बैन हुये द्रोपदी के ताते नैन,
कोप की कराल ज्वाल तेज तन लागी है ।
ठोकर मार जिमि करफुसकार उठ,
फन को पसार काल सर्पणीसी जागी है ॥
बोली अरे क्रूर हट नीच खल कामी दूर,
काल बस आज तेने लोक लाज त्यागी है ।
जानो न अनाथ मुझे पांच देव मेरे साथ,
उनके ही हाथ तेरी मौत हतभागी है ॥१॥
छोडूंगी न कुल कान त्याग दूंगी देह प्राण,
करके कुकर्म कुल धर्म को न धारूंगी ।
ठेर देख मेरो ठाट अंग तेरो काट काट,
लाल लहू चाट चाट चण्डी रूप धारूंगी ॥
मूढ़ हट दूर भाग लेके निज जीव आज,
मुझको है लाज यमराज से न हारूंगी ।

(वीराला छन्द)

तबतो कीचक हुआ विकल हां और क्रोध भी बढ़ आया।
करने अत्याचार नराधम आगे को वह बढ़ आया ॥
टूट पड़ा जब देवी ने तब आंख दिखा ललकार दिया।
झपट जोर से पांव पीठ पर उस पापी के मार दिया ॥
गिरा धम्म से धूर्त धरा पर धूली धुसरित अङ्ग हुआ।
संज्ञा हीन दीन दुर्लवसा ढङ्ग रंग बदरंग हुआ ॥
किन्तु प्राण से उसे न मारा समय सोच कर टाल चली।
धर्म बचा कर गई भुवन को पापी की नहीं दाल गली ॥

दोहा

घटे न फिर भी घोर तर, कीचक के उत्पात ।
गई भीमके पास द्रोपदी, एकदिन आधीरात ॥

(द्रोपदी का भीम को जगाना)

तर्ज़ राधेश्याम

एक भुवन में भूमी ऊपर भीम महारथी सोता था ।
जिसके प्राण वायु से घुर-घुर घुर-घराट सा होता था ॥
उस महत भवन में काया जिसकी निद्रा के बल पड़ी हुई ।
मानो महा शिला परवत की नर आकृति में पड़ी हुई ॥

गज़ल

तर्ज—यों जुल्म करना जालिम लुत्फो करम के बदले

घर बार राज तजि के दर दर के हों भिखारी ।
फिरभी न छूट पाई सुख नींद यह तुम्हारी ॥
परवाह कुछ नहीं है आजाय और आफत ।
वे पर्दगी गवारा करती न आर्या नारी ॥१॥
आघात कर रहा है मेरे सतित्व ऊपर ।
रानी का नीच भाई चाण्डाल पाप चारी ॥

सुख नींद आप सोते रहते हो हाय हरदम।
बेचैन रहती हूँ मैं पापी के डर की मारी॥ २ ॥
देंगे न आप उसको कुछ दण्ड इसके बदले।
क्योंकर कहूँगी तुमको बलवान तेजधारी॥

थियेटर

कुछ धीर धरो नहीं क्रोध करो प्रिय रानी ।
उस जान।लिया अब ठान लिया बस प्राण लिया अब जान जान।
वह अधम ऊधम कर कर अनेक, कुछ धर्म को न मन विवेक॥
हैरान भगवान, क्या और कहूँ इतनी अकुलानी॥
यह विपत तुरत तुम हरो मेरी, मैं वीर बहू यह कहूँ टेरी।
अब प्राण त्याग में न रही देरी श्रीमान् दो ध्यान ।
अब देर किए कुछ हुइ है हानी॥ कुछ धीर०

दोहा

सहलूंगी संकट सकल, क्रूर कलेश अति घोर।
पर सह सकती मैं नहीं, कि खल देखें मम ओर॥

ग़ज़ल

हा कौन गति है यह मेरी है भगवत क्या मरजी तेरी।
किस जटिल जाल में जकड़ा हूँ सब नष्ट हुई है मति मेरी॥
अज्ञात वास के बन्धन में मैं पकड़ा जकड़ा नहिं होता।
उस नीच नराधम के वध में क्षण एक नहीं होती देरी ॥१॥
कर्त्तव्य कठिन प्रण पालन का पड़ता न धर्म का संकट जो।
नरवीर वधू परवश होकर क्यों रहती यों बन कर चेरी ॥२॥

छप्पय

राज ताज सुख साज धाम धन वैभव छूटे।
कपटी कौरव वृन्द कुटिल ताकर सब लूटे॥

इच्छा थी परिपूर्ण करें अज्ञात वास कर।
किन्तु यहां यह नीच तुला सर्वस्वनाश कर॥

दोहा

स्त्री रक्षा तक नहिं करे, यह अन्याय न अल्प है।
कीचक का वध कलही करें, बस यही संकल्प है॥
कपटी सों कर कपट पट झटपट करियो चोट।
नटखट का आखेट नहिं होती है बिन ओट॥
हँस करके उस हीन सों कह देना यह वैन।
गौशाला में आइयो पहर गए की रैन॥

छन्द

भरतार के वैन सुने कछु चैन मिल्यो गई एन सुभाव भरी।
वह औसर देख दिखाव के छन्द हँसी मतिमन्द सों सैन करी॥
बतराय बुझाय सुझाय दई भई बात जो भीमके संग खरी।
हुलसाय सजाय के अङ्ग गयो जब रैन गई कछु चार घरी॥

दोहा

चार घड़ी के प्रथम ही तहाँ जा बैठा भीम।
अँधियारे के बीच में क्रोध भरा निसीम॥

(राधेश्याम)

गिनगिन के घड़ियां दिन बीता कीचक को नहिं चैन भई।
गौशाला में जाकर बैठा चार घड़ी जब रैन गई॥
बोला प्रिय कहां हो आओ अब तो पूरी आस करो।
बहुत दिनों से चाह भरी है मिलकर प्रेम विलास करो॥
यह शुभ दिन है शुभ अवसर है जो मेरी यह प्रारब्ध जगी।
पूर्ण होगी प्रिया आज वह बहुत दिनों की लगन लगी॥
यों कह आगे बढ़ा भीम ने दृढ़ हाथों से पकड़ लिया।
आओ प्यार करें प्रीतमजी यों कह कसकर जकड़ लिया॥

रे दुष्ट पराई अवलाओं पर पाप दृष्टि तू करता है।
फल उसका ले भोग भीम के हाथों से तू मरता है॥
पटक पछाड़ दिया भूमी पर कीचक बस हत प्राण हुआ।
दुष्ट कर्म से मरा दुष्ट अरु देवी का कल्याण हुआ॥

चौपाई

कीचक की यह कथा सुनावें। नीच कर्म कर नर दुख पावें॥
चाहें अगणित संकट आवें। तदपि सती नहिं धर्म गँवावें॥
सुख सन्मान सकल तज दीजै। पर निज त्रिय की रक्षा कीजै॥
व्यास सदा कर पुण्य कमाई। पाप अन्त को है दुखदाई॥

(भीम पलासी ताल रूपक)

जो मनुष्य स्वयं बड़ा बनता है आखिर उसको नीचा देखना पड़ता है। क्योंकि इसका उदाहरण लेलीजिये जिस व्यक्ति ने अभिमान किया उस उस को नीचा ही देखना पड़ा और सदा के लिये बदनाम हो बैठे सुनिये।

ग़ज़ल

यह बुराई है बशर में मैं बड़ा हूँ मैं बड़ा।
नीचा गिरता है जो कहता मैं बड़ा हूँ मैं बड़ा॥
लंकपति रावण हरी थी जानकी छल भेष में।
माना कहना नहिं नारि का बस मैं बड़ा हूँ मैं बड़ा॥
पकड़ कर धरणी पे पटका राम ने रावण को जब।
पूछा तीरों पर लिटा कर तू बड़ा या मैं बड़ा॥ ॥१॥
हिरनाकुश ने बड़ा बनना चाहा था संसार में।
ईश का जपना छुड़ाया था मैं बड़ा हूँ मैं बड़ा॥
आगए नरसिंह योद्धा पकड़ा उस जालिम को जब।
पूछा घुटनों पर लिटा कर तू बड़ा या मैं बड़ा॥२॥

कंस अत्याचार कीनों देवकी वसुदेव पर।
कहने लगा अभिमान में बस मैं बड़ा हूँ मैं बड़ा ॥
ले शुदर्शनचक्र धाये कृष्णजी जब कंस पर।
पकड़ कर चोटी कहा अब तू बड़ा या मैं बड़ा ॥३॥
मत करो अभिमान झूंठा जग में प्यारे भाइयो।
मर जायगा वह सबके पहले जो कहे कि मैं बड़ा ॥४॥

भैरवी कहरवा

भूल नहीं भव भीति भयंकर भज शंकर सुखरासी।
ओम अन्त अनादी अनुपम अव्यय अजवय नासी ॥
बंम बंम टेरत क्यों जग हेरत गोकुल मथुरा कासी।
अटल ध्यान धर हृदय पटल में राजत घट घट वासी ॥
सब जग स्वामी अन्तरयामी क्यों कहना कैलासी।
विश्वम्भर को वागेश्वर धर समझत सत्यानासी ॥
मांग मकर की फिकर न कर कुछ कार्तिक पूर्णमासी ॥
सर्वऋतु में फलदाता है सुरतर वारेह मासी ॥
सब सुख वैभव ऋद्धि-सिद्धि नव जिन चरणों की दासी।
व्यास ग्रास भर भोग लगाकर मत कर उसको हाँसी ॥
॥ भज शंकर सुख रासी ॥

छन्द

बन वृक्षमें तृण तूलनमें मृदु मूलनमें फल फूलनमें।
घन दामिनि में गिरि गगन में शशी तारन में गगनागन में ॥
तन में मन में पट भूषण में मग हाटन में घर द्वारन में।
जित देखूं पिया तिति दीख परे पिया छाय रहे इन नेनन में ॥

कवित्त

कभि मैंने जाना वेह मंजु मयंक में हे देखता इससे बड़ी चाव से चकौर हैं। कभि यह ज्ञात हुआ कि वो जलधर मैना चतानिहार

के इसीसे मन्जू मौर हैं। कभी यह अनमान हुआ की वो पुष्पों में हैं दोड़ कर भृग वृन्द जात छिस ओर हैं। कैसे अचरज की यह बात नहीं जान पाई मेरे हियहों में बसा मेरा चित्त चोर हैं ॥

सवैया

कन फटे लिपटे सब अंग भुजंग कुढ़ग सो ढ़ंग बखाने
भूत पिसाज के संग भंग चड़ा पके भंग उमगसी आने।
नाचत नंग धडंग निलज सो मस्त मलंग बड़ो सुखमाने।
व्यास भयो जग मूढ़ सरा सर शंकर सत्यस्वदपने जाने ॥

भजन

ईश्वर का जप जाप रे, मन वृथा काहे को जन्म गँवावे।
दीनानाथ दयालु स्वामी प्रकट सब जा आपरे॥
सर्व व्यापक की पूजा कर दूर होवें दुख तापरे।
कुछ न बने पत्थर पूजन से ईश्वर रखा जिसको थापरे॥
छोड़ असत को सत ग्रहण कर नष्ट होवें दुख तापरे।
खुश होकर प्रभु विन्ती सुनले "बेकस" करे विलापरे॥

भजन

नय्या मोरीनाथ यस डोल नदीया तरन ना पावन देरी कहा करू कित जाऊ प्रभूजी ॥१॥ नय्या॥
थिरक रहिं थिरता नहिं आवे नीच खेवट वाखैय जाने ठौर ठौर झक झोरत झोंकेरे ॥२॥
चमक बड़ी एपला चवकावे बीच भवर कुछ सूजन पावे व्यास कौन तुम बिन जो रोके हां ॥३॥

भैरवी दादरा

बार बार इत उत क्यों जावेरे मना बार बार इत उत क्यों जावेरे ॥
सच्चे ईश्वर का ध्यान, करत नहीं ऐ अज्ञान,
मानुष का शरीर फेर हाथ नहीं आवेरी ॥बार बार इत०॥१॥
एक विरत्न के आधीन खो बैठी वो प्राण,

भी तू तो पाँच ही में लुभावेरे ॥ मन बार बार इत० ॥ २ ॥
पशुओं की खाल से तो बजते हैं साज बाज,
मानुष की खाल कछु काम नहीं आवेरे ॥बार बार इत०॥३॥
अमृत के बोल बोल ज्ञान को हृदय में तोल,
देख फिर ऐसा अमोल ओंकार पावेरे ॥ बार बार० ॥ ४ ॥

छन्द सवैया

काम कियो कछु नेक नहीं, अभिमान में खूब बढ़े हो अगारी।
अपने धर्म पर ध्यान धरे नहीं, लाज गई इस दीन की सारी ॥
लाल लुटे तेरे माल लुटे सब लाज लुटे दुख सहते हो भारी।
हाय जरा अब आँख उघारो, वेद प्रचार की आगई बारी ॥

सच्चे भक्त की प्रतिज्ञा

सम्पत्ति जाय तो मोह मिटे अरु गर्व घटे अपने मन को। सुत भ्रात के जात कटे जुग जासन छाउन फेर पड़े धन को। यदि प्राण चले कछु त्राण नहीं इन एक विनाश खरो तिनको। धर्म गयो तो सुने समझे पर धिक हजार बड़प्पन को ॥ सुख साज हटे घर बार लुटे धन सम्पत्ति सर्व हरे तो हरो। सिर वज्र परे गल फाँस धरे भल से पहाड़ परे तो परो ॥ शूल के शंक चढ़ाय कढ़ाय कें चाम में नोंन भरे तो भरो, मैं निज धर्म न त्याग करु चहे कण्ठ कुठार धरे तो धरो ॥

संकट वार पड़े धन धाम हरे ममता नहीं जोरुँ, गात सहूं तप बात सहूँ उत्पात सहूं दस हू दिश दोरुँ ॥ अमें छिदे कटु कंटक से सह संकट न्यास नहीं मुख मोड़ूँ ॥ गेह तजूं भल देह तजूं पर ईश भजूं क्षण एक न छोड़ू, या तन पै तलवार धरे सर पार करे तो कभी न नटू मैं। कोटिक क्रूर क्लेश मिले दुःख देह दले तो रती न हटूं मैं, खल काढ़ी कुठार प्रहार करे भल अंगूठ चार के टूक कटूं मैं ॥ किन्तु यही एक आस करुँ हरि भक्ति करु प्रभु नाम रटूं मैं ॥

श्री भगवन्त सुनो यह विनती अन्त की वात विचार सुनाऊँ।
मागु न भानन धाम धरा सुत चित्त पर रंचक चित्त न लाऊ ॥
दीन बन्धु चाहे हीन बनू परयो वरदान दया निधि पाऊं।
मोह मन में तव भक्ति रहो अनुरक्ति रहे जिस जन्म में जाऊं ॥
दीन के बन्धु दया करिके याद दीन की एक सुनो तो सुनाऊं ॥
भोग की एक न भूख मुझे नहीं। चूक कभी इस पै ललचाऊं ॥
नेकन नोक बुरे की कहूँ भव सिंधु तरे किन वात बनाऊ।
एक ही टेर करु विनती जिस जन्म परु तुमको न भुलाऊं ॥

अब औरहि तव स्वतन्त्र भई, गुरु मन्त्र को जाप न जापति है ॥
भल भोज्य अनेक न देवति छेक, औकेक के ढेल सों धापति है ॥
इमि व्यास प्रताप पुरातन को, कुछ और हि छाप में छापति है ॥४॥
धनि धानिधरा धन धर्म की धूल, उड़ा कर और हिमूलन भूलति है।

भजन तर्ज (शरण में आये हैं हम तुम्हारी)

पतित के पावन प्रभो दयामय उवार लीजे उवार लीजे। मिटा के मेरा अधर्म आमय उवार लीजे उवार लीजे ॥ अधर्म भागे हृदय से हटकर विनाश होवे कुकर्म कटकर। शरण से बना के निर्भय उवार ॥१॥ उधार वनकर सुधार पाऊं जगत में जीवन न हार जाऊं। वना महाशय मिटा दुराशय उवार लीजे ॥ या विनाशकारी विपय विदारय महान मिथ्याभिमान भारय भया तुरो हूँ भवाब्धित्तरय उवार लीजे ॥३॥ करू किसी से कभी न छल वल हो व्यास मेरे विचार निर्मल, कहाऊं जग में न नीच निर्दय उवार लीजे ॥४॥

भजन

जग ढूंढ़ लिया मिलते ही नहीं, चुपचाप छुपे चित्त चोर कहीं।
कर देव दया दिखलादो झलक, नहीं तो तुम से कुछ जोर नहीं॥
तुम व्यापक हो सबके मन में, जल में थल में बिजली घन में।
इस दास के मोद भरे मन में, तुम ही तो बसे कोई और नहीं॥
सुख मेह सदा बरसाता तुही, जग जीवन को हर्षात तुही।
मुझ दीन को क्यों तरसाता योंही नचवाते मेरा मन मोर नहीं॥
सुखदायक हो कहने के लिए क्यों छोड़ा मुझे बहने के लिए।
चरणों में पड़ा रहने के लिए, शरणागत को क्या ठौर नहीं॥
तुम पापिन के अघनाश करो दलितों के लिए सुख आश करो।
कह व्यास क्यों भव त्रास हरो, अपराध हुआ अति घोर नहीं॥

भजन

छलने का नहीं छलिया तुमसे, तब प्रेम का पन्थ मैं जान गया।
तुम मान बिना मिलने के नहीं यह बात सही मैं मान गया॥१॥
गए प्रेम के फन्द में हो पकड़े, उरधाम के दाम गये जकड़े।
रह लोगे कहां कब तक अकड़े, दोगे न कहाँ तक दान दया॥२॥
अति अस नहीं हूँ विचक्षण में, शुचि सेवक के शुभ लक्षण में।
कुछ देर नहीं इस ही क्षण में, कहदोगे मेरा अभिमान गया॥३॥
बिन भूल फूल नहीं खिलता है, बल ही से बल नर हिलता है।
क्या भागे से कुछ मिलता है, इस ओर न मेरा ध्यान गया॥४॥
द्विविधा तो यहाँ डटने की नहीं, कपटी तुमहो पटने की नहीं।
मन आस व्यास घटने की नहीं, हटकी नहीं हट ठान गया॥५॥

भजन

विचर रही है घर विविध विचित्र वेश सुख की लताऐं छिन्न भिन्न कर तोड़ती। भयंकर तो भेद भाव भर करके भाइयों में, बंधे हुए घरों को है कौशल से तोड़ती। हो रहा समाज अन्ध, करता

प्रबन्ध नहीं कर छल छन्द रक्त नित्य ही निचोड़ती। अभी भूत भारत सी भव्यता डकार चुकी, तो भी भारी भूले हाय पिंड नहीं छोड़ती ॥१॥

महिला से भई मिस मेम भई, कहे दूध को मिल्क और पानी को वाटर। प्यारे को डीयर खाने को डीनर ॥ बहिनी को सिस्टर बेटी को डाटर ॥ बाप को फादर, भ्रात को ब्रादर मात को मादर, गेह को काटर। व्यास मिसेज़ भई मिस राइन, गाल रंगे मनु लाल टमाटर ॥४॥ भारत की भलि भामनियाँ, भई भ्रष्ट पड़ी उलटी कुछ छाया ॥ चोली ते रुठ दे चरि को पूंठ धरे पग बूटरु स्यूटर शाया ॥ यों कढि जात बजार सो छाकरि, ले संग नौकरी डौकरी दाया, सास कि चारु न सभ्य लिवास, फिरी जब 'व्यास' विदेश कि साया ॥८॥ बाँध के बाल ढको निज भाल लगा दोऊ गाल न रंगत राली। तोड़ सके वतरात बने, नहिं शीश छके नहिं देह पे गाती ॥ खेलति खेल लिए संग छैल, दिखावति फैल वड़ी इतराती। डीयर फ्रेन्ड सो सेकिन हेण्ड, दबावति व्यास न चावति छती ॥३॥

भजन भैरवी कहेरवा

पड़ा है दीन तुम्हारे द्वार।
कहो अब क्यों न करो भवपार ॥

कहाते हो तुम दीनानाथ, दीन का पकड़ो क्यों ना हाथ। विश्व में व्यापक हो भर पूर खड़े हो क्यों फिर मुझसे दूर ॥ पतित को पावन करते हो, मुझे छूने से डरते हो। तुम्हारा देव दयालु है नाम, कौनके आयेगा वह काम समझ लो कहने का कुछ सार ॥ छुपोगे कहाँ विश्व व्यापी। पकड़ कर मानेगा पापी ॥ बिगड़लो है तुमको अधिकार किन्तु फिर बनना नहीं अविकार ॥ झिड़कदो ! झिड़की सह लूंगा। व्यंग मैं मन की सह लूंगा ॥ कहूंगा बस

ऐसे हो। सुना था तुम वैसे ही हो॥ सुना कर मानूंगा दो चार। तुम्हें है मुझ से अधम अनेक। मुझे तो तुम ही हो प्रभु एक॥ और कहीं ठौर न जाने का। छुड़ाये छोड़ न जाने का॥ तुम्हारा नाम रटूंगा मैं। हटाया नहीं हटूंगा मैं॥ टेक कर बैठा हूँ भगवान। हृदय में निश्चलता को ठान॥ न खाली लौटूंगा इस वार।

भजन

हरि कब हर लोगे सन्ताप।
प्रलय कब होंगे पामर पाप॥

अगर नहीं देखोगे इस ओर, पतित ही पाओगे सब ठोर। प्रबल है अधमों की उत्पात, सतावे सन्तों को दिन रात॥ मिटेगी महलो की मर्य्याद, बढेंगे मान मोह उनमाद। तीव्र तर खल दम बल की त्रास, बीति का कर रही नीत॥ निसी नाश॥ लगादो उन पर अपनी छाय॥ हरि दिनों दिन बढ़ते हैं दुष्कर्म, छोड़ कर चला धरा को धर्म। कहीं पर जूवा कहीं व्यभिचार, अनेकों अगणित अत्याचार॥ नित्य नित रोग शोक भूचाल, देश का दलन करे दुश काल॥ खेलते खल जन खोटे खेल, व्याह तक होते हैं अन मेल। करोड़ों विधवा करें विलाप॥ हरि॥

धर्म के हों शुभ कर्म अनेक, अटक नहीं पढ़ने पावे एक। सजावें सप्त सनातन साज बचावे अबलाओ की लाज॥ शिखा अरु सूत्र न टूटें नाथ निबल पर सबल न डाटें हाथ। प्रकंट हो शिवा शूर रणजीत, करे जो खल दल को भय भीत॥ चढ़े फिर चेटक राण प्रताप॥ हरि॥

भजन

कहुँ बैठ श्मसान में रात जग्या,
कहुँ मन्त्र जप्यो सरिता जल में।
कहुं तन्त्र के ठाट ठगाइ गयो,

रस रूप रसायन के छल में ॥
सब आस की अन्त निराश भई,
यम फाँसी परी जब ही गल में ।
नहिं धर्म कियो न सुकर्म कियो,
ना व्यर्थ जियो जग तो तल में ॥१॥
तातक भ्रात विलाप करे,
परिताप भरे सब ही विलखावें ।
पूत पुकारत गात पछारत,
राँड को रोज सुन्यो नहिं जावे ॥
गाँव के लोग विगाहन के,
वीक बुरे गुन औगुन गावे ।
प्राण विहीन मलिन सी देह,
धराये धरी सुनने नहिं पावे ॥२॥
भामिनि भ्रात पिता अरु मात,
सखा सुत तात सगे किनके हैं ।
धाम धरा धन वैभव रंग,
सुभूषण कंकण के दिन के हैं ॥
रस हास्य विनोद विलास प्रमोद,
सब सुख साज किते दिन के ।
वारिधि बीच परो तृण ओछ्यो,
पौन चले तिन के तिन के हैं ॥३॥
एक के हाथ में आन परे सब,
आपहि आपने माल किसी को ।
दैव प्रसंग ते आन बने कोऊ,
माल को मालिक लाल किसी को ।
कोऊ बनावत खावत कोउक,
जेमत कोउक थाल किसी को ॥

या विध एक से एक लगाव को,
सन्त कहे जग जाल इसी को।
सोचत शोक भरे सगरे,
सुत वन्धु सखा पितु मातरु नाती॥
भामिनि भोन में बैठ के रोवती,
खोवति प्राणन पीटति छाती।
शोक को शतवार हसारन,
कौन सुने जो दया कछु आती॥
सूनिसि देह परी बिन प्राण के,
तेल विहीन बुझो जिमि बाती।

हठीला भक्त

दोहा—हँस हँस कर ही नाथ तुम्हें, निश्चय आज हँसा लूंगा।
अथवा रोकर अश्रुजाल में, तुमको पकड़ फँसा लूंगा॥
विविध चरित्र रच आज तुम्हारा सदय हृदय दहला दूंगा।
तब मानूंगा जब मैं मुख से मिलता हूँ कहला लूंगा॥

(भैरवी, भजन, ताल केरवा)

मिलोगे कब तक नहीं अखिलेश।
यत्न नहीं छोड़ँगा कुछ शेष॥

गगन जल थल में भटकूंगा कहीं पर नेक न अटकूंगा।
निरन्तर नव नव नगरों में ग्राम में घर में डगरों में।
बाग में वन में फूलों में नदी के दीर्घ दुकूलों में॥
कुन्द की कुसमित कुञ्जों में पद्म के पुलकित पुञ्जों में।
ढूंढ कर मानूंगा सब देश मिलोगे कब तक नहिं अखिलेश॥१॥
गिरिन के गुप्त गुहाओं में दरि की दुर्ग मराहों में।
बलाहक बारी विसरजन में तड़ीत के तर्जन गर्जन में॥
चमकने चपल पतंगों में जलधि की सरल तरंगों में।

कहीं तो पाऊंगा सन्देश, मिलोगे कब तक नहीं अखिलेश ।।२।।
देह के गेह गुहायु में श्वास के जीवन वायु में।
नशों की फुदकन फड़कन में हृदय की धकधक धड़कन में ।।
छुपे यदि बैठे हो चुपचाप देखलूं यह भी अपने आप।
पड़ गया मैं तेरे छल में मिला तू मम अन्तस्थल में ।।
यहाँ तुम कब से बैठे हो हृदय में क्योंकर पेठे हो।
कहीं पर लगी न कुछ भी ठेस, मिलोगे कब तक नहीं अखि० ।।३।।
किसी के घर में धसते हो और बदले में हँसते हो।
चरण कमलों को पकड़ूंगा प्रेम वल्ली से जकड़ूँगा ।।
किन्तु हाँ हारि गया मैं आज होगया उलटा ही सब साज।
भटक कर हाय जिसे हेरा मिला जब पता नहीं मेरा ।।
व्यास सब कट गये क्रूर कलेश, मिलोगे कब तक नहीं अखि० ।।४।।

(भैरवी) भजन तर्ज़ ऊपर की

प्रेम का प्यासा हूँ भगवान्।
करादो प्रेमा मृत का पान ।।

मुझे नहीं सुख सम्पति से काम न मागूं सुत सन्तति धनधाम।
तुम्हारी दया दृष्टि की कोर चाहिये मुझको नहिं कुछ और ।।
लोग का मैं नहीं चेरा हूँ भिखारी हूँ तो तेरा हूँ।
दे चुको प्रेम भक्ति का दान, प्रेम का प्यासा हूँ भगवान् ।।१।।
सार कुछ है नहीं नटने में पाप है मुझको हटने में।
नागना यद्यपि छोटा है न देना उससे खोटा है ।।
वस्तु जो धरी रखेती है छीनना नहीं डकैती है।
हृदय पर दावा कर दूंगा हार कर धावा कर दूंगा ।।
न्याय से करदो अनुसन्धान, प्रेम का प्यासा हूँ भगवान् ।।२।।
बात नहीं मानूंगा मैं एक रूठ कर बैठूँगा कर टेक।
अड़ूंगा लूंगा झगड़ूंगा देखना कितना बिगड़ूँगा ।।

न दोगे लूंगा मचलूंगा स्वांग बचपन के रचलूंगा।
अंक में लेना ही होगा अन्त में देना ही होगा॥
बात कुछ समझो देकर ध्यान, प्रेम का प्यासा हूँ भगवान्॥३॥
दे चुके कह देवो दो बार सफल भीखा डारो दो चार।
शिष्य पर धरा प्रेम का हाथ मिल गया अब तो दीनानाथ॥
न छेड़ो पीने दो दो बूंद न देखो लो वैनों को मूंद।
नजर नहीं मुझको लग जाय ठगोरी आँखें ठग जाय॥
प्यास अब पीकर हूं मस्तान, प्रेम का प्यासा हूँ भगवान्॥४॥

भजन (प्रार्थना)

टेक—धन तेरी कारीगरी हो करतार, धन तेरी कारीगरी हो करतार।
जब निराकार और निर्विकार साकार बना दिया जग कैसे।
जागृत स्वप्न सुषुप्त तू था फिर रचा मुक्ती का मग कैसे।
क्या वस्तु लई जिस से देह भई फिर बना दई रग २ कैसे॥
सबको धार रहा रम सब में रहा फिर सब से रहा अलग कैसे।
जब सब में है तू सब गुलों में बू सब रूहों की रूह फेर सुभग कैसे।
जब अपाणि पादों जवनो ग्रहीता फिर कोई पकड़े पग कैसे।
जब सृष्टिकर्त्ता भर्त्ता धर्ता हर्ता रहता अनहग कैसे॥
जब काशी कावे में न पता फिर आवे बता यहां लग कैसे जी॥
बन परवत पृथिवी नभ तारे सब को रहा तू कैसे धार॥ धन०॥१॥
किये रंग बिरंगे फूल और बादल रंग को रैणी कहीं नहीं।
किये सूरज से चमकते पदार्थ चमक निराली कहीं नहीं॥
नर तन सा चोला सीम दिया सुई धागा हाथ में कहीं नहीं।
पत्ते २ की कतरन न्यारी हाथ कतरनी कहीं नहीं॥
बरसे जब भरदे जल जंगल आकाश में सागर कहीं नहीं।
दे भोजन कीड़े कुँजर को चढ़े दीखे भण्डारे कहीं नहीं॥
दिन रात न्याय में, फ़र्क पड़े नहीं लगी कचहरी कहीं नहीं।
कर्मों का फल दे यथायोग्य मिले रू और रियायत कहीं नहीं जी।

अखण्ड जोती अपार लीला किनहूँ न पाया तेरा पार ॥ धन० ॥ २ ॥
जाने कौन विध गर्भ में रह कर दे क्रीड़ा बालकपन की।
फिर जीवन जवानी आई कहाँ से कमी रही न जोवन की।
फिर वृद्धपन्न देकर दिखादे सब को बनी सो एक दिन बिगड़न की।
कोई पैसे २ को मोहताज है कोई खोल रहे कोठी धन की।
कोई पी संग कामिन खेल करे कोई रो २ राख करें तन की।
कोई भटकते २ उमर गंवावे कोई तृप्ति कर रहा मन की।
पुरवत भूमि टीबे पर टीबे कहीं २ लहर हरे बन की ॥
कहीं ताल सुरंगें जल से भरे कहीं चोटी चमक रही परवतन की ॥
कहीं सर्द समय के झोले बगें कहीं धूप गरद गर्मी घन की जी।
कहीं चतुर्मास घटा चढ़ आवे बरस के बहादे जल धार ॥ धन० ॥ ३ ॥
चाहे कितना ही बरते ना निबड़े जब देन लगे तू इतना माल।
नहीं दे जब चहे दिन रात कमाओ फिर भी वह नर रहे कंगाल।
अदना से आला कर पलक में जब नर पर तू हो कृपाल।
राजों का राज ताजों का ताज तूही महाराज काल का काल।
तूही ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेश नरेश हमेश निराली चाल।
तू इतना ज़बर नहीं तेरी ख़बर मेरी सुन दिलवर मुझे कर निहाल।
रहूं तेरी शरण गहूं तेरे चरण मत दे तू मरण हम तेरे लाल।
ऐ सुख निधान रख मेरा मान दे भक्ति दान होकर दयाल जी।
दीन बन्धु सुन हम दीनों की अहे प्रभु पतित उधार ॥ धन० ॥ ४ ॥
तू अनन्त तेरी गति अनन्त तुझे देख सन्त कर योग ध्यान।
हैं साधन तेरे अमित बड़ेरे प्रेरे रवि शशि से महान्।
जाने कहा सीखे न देखे कीड़ी के बना दिये नाक कान।
नहीं छाया धरे रंग इतने भर किसी तरह न गिन सकता जहान।
सब जगह ज़ोर अन्य नहीं तुझसा और सिर सबके मौड़ सबका प्रधान।
मायानुगामी जीव को स्वामी अन्तरयामी बल निधान।
सच्चिदानन्द तू करुणाकन्द मैं महामन्द मुझ अपना जान।

अति दुखी भया तुझे कूक रहा कर मुझ पै दया दे अपना ज्ञान जी ॥
तूही सखा सनेही तू ही है हमारा परिवार ॥ धन० ॥ ५ ॥
चार वेद छः शास्त्र पुकारें, सार गुन की संभार नहीं ।
फिर ऋषि मुनी और संत महन्त थके गा २ पर पार नहीं ॥
जो करदे सो नहीं बदल सके किसी और को इख़तियार नहीं ।
जो करे सो ईश्वर आप करे, किसी और को चहत सहार नहीं ।
जो करनी चाहे सो कर गुज़रे किसी काम में तू लाचर नहीं ।
कर भक्ती रंक गले लिपटे बिन भक्ती भूप से प्यार नहीं ॥
जो प्रेम करे जिससे परचे, तेरे ऊंच नीच की टार नहीं ।
ये हरीसिंह दरवाजे खड़ा क्यों इसकी सुनते पुकार नहीं जी ।
शुभ स्वरूप दरशादे अपनो खोल के अखंड द्वार ॥
धन तेरी कारीगरी हो करतार ॥ ६॥

भजन सांगीत त्रिभंगी शुद्धि

टेक—ईश्वर मेरे को भगत पियारे हैं ॥

भक्तीहीन ब्रह्मा क्यों ना हो कभी श्रेष्ठ गती को पावेना ।
नीच करे भक्ती कन लाके, इधर उधर मन डुलावे ना ॥
काम क्रोध मद लोभ तजे विषयों में चित्त लगावे ना ।
वेद पढ़े षटशास्त्र पढ़े षट कर्म करे शरमावे ना ।
वो निश्चय पावे परमधाम कभी मन बिच शंका लावे ना ।
उसे महापुरुषों में पदवी मिले किसी विध कोई उसे हटावे ना ।
यहां जन्म जाति का ज़ोर चलेना कर्म विफल कभी जावे ना ।
कर्म प्रधान विश्व कर राखा वृथा मती इतरावे ना जी ।
निराभिमानी सदा जय पावें, अभिमानी हारे हैं ॥ १ ॥ ईश्वर० ॥
कपिल मुनि थे कौन धुनी जिन सांख्याशास्त्र को गाई के ना ।
वालमीक की जाति बता जिन शुद्ध रामायण बनाई के ना ।
भारद्वाज कोशिक ऋषि नारद ब्राह्मण पदवी पाई के ना ।
गौतम ऋषि ऋषि विश्वामित्र पर विप्र पन की छबि छाई के ना ।

वशिष्ठ मुनी माता कौन जिन राम पै सेवा कराई के ना।
वेद व्यास के जन्म से पीछे सत्यवती पर नाई के ना।
विद्याधरी नृप भोज की कन्या कालीदास को व्याही के ना।
कर्म प्रधान विश्व कर राखा अब भी समझ में आई के ना ॥जी॥
जनम जाती का जोर चले ना कर्म करारे हैं। ईश्वर मेरे ॥ २॥
स्त्री शुद्र को कहते बराबर जनम जाति के अभिमानी।
भगतमाल में लिखते शरम नहीं आई करी क्यों नादानी।
कुन्ती, द्रोपदी, तारा, मन्दोदरी, चित्तौड़ की मीरा रानी।
करमां कुबरी, वेश्या माडली शिवरी कहां की ब्रह्मानी।
सेन सजन अजामेल नामदे कबीर और नरसी ज्ञानी।
कहते हैं झकोले लेती कुन्डे में रवदौस के गंगो धयानी।
निश्चलदास पर ब्रह्मदत्त नित पढ़े शास्त्र वैदिक बानी।
कर्म प्रधान विश्व कर राखा फिर भी जाति बड़ी क्यों मानी।
॥ जी ॥ जिन २ कर्म किये उभरन के सोई उभारे हैं ॥
ईश्वर मेरे को ॥ ३ ॥
पदमयीया तेली किरत मंगल गाकर काम चलाते हैं।
खैराशाह और धुनाशाह के बारह मासे चिल्लाते हैं।
अली हसनू मुसल्मानों की बानी बोल हरषाते हैं।
गंगालहरी का करके पाठ नहीं मन में जरा शरमाते हैं।
घीसा जाट के चेले सैकड़ों छुन्द रंगीले गाते हैं।
धानो कौन था जिसका खेत किन बीज उपजा बतलाते हैं।
विदुर कौन पटरानी पुत्र था कृष्ण जिस को जिमाते हैं।
कर्म प्रधान विश्व कर राखा फिर भी कैसे इतराते हैं।
जनम जाती का गर्व करें जो बे मुख कारे हैं।
ईश्वर मेरे को० ॥ ४ ॥
विप्र कासी तज विद्याध्ययन कर विलायत से यहां आए के ना।
वहां चश्मों का पानी होटल के भोजन मेजों पर धर २ खाये के ना।

करके गुरु किरश्चाअन सुजानों की चिलमें भर २ चरन दबाये के ना।
अंगरेज़ी विद्या के निपुण यहां आकर के विप्र कहलाए के ना।
कितनों ने गंगा में ग़ैरों के मुरदों के सर धर के हाड़ें बहाए के ना।
कितने नचारों ने विप्रों के पुत्रों को महफ़िल में लाके नचाये के ना।
मुरदों के कफ़न पै लड़ २ के मरने से पोपों की पदवी को पाये के ना।
हठ धर्मी छोड़ कर सच्ची कहो भाई अब भी ज़रा शरमाये के ना।
जनम जाती के मानी गुमानी बुद्धि के मारे हैं॥ ईश्वर मेरे० ॥ ५॥
बड़े बड़ों के करें काज नर छोटे सदा उत्पात करें।
निन्दा वेदों की करें सभा में, जानो वे नर गुरु घात करें।
अति कष्ट सहें और नर्क पड़ेंखल सूकर श्वान खर जात धरें।
ब्रह्मज्ञान की कविता करें भर जनाना बाना नाच करें।
विप्र वंश को करते कलंकित वेश्या भांडों को मात करें।
उन्हें रोवें कहारी और भटियारी नाई विचारे कहां लौं टरें।
खाना पकावें पानी पिलावें सिंधारे पहुंचावें ज़रा ना डरें।
गरुड पढ़ें पर सज्जिया चढ़ें फिर वस्तीराम से बात करें।
जो हरीसिंह हरी भक्ती भवन के खुले जो द्वारे हैं।
ईश्वर मेरे को भगत पियारे हैं॥ ६॥

भजन (स्वर्ग में महासभा)

टेक—एक दिन देव सभा में रंग छाये, नौ एक दिन०।
शुभ घड़ी शुभ वार, रंग छाये थे अपार, राजा इन्द्र के दरबार, भीड़ भई थी घनी। दुर्गा आई थी नौ किरोड़, शंभू आये थे छै किरोड़, भुकी तंबुआ तनी, ब्रह्मा विष्णु व महेश, बेटा शिव का गणेष, आये नाग यहां शेष, फन २ पे मनी। आये भैरों वलखंडी हनूमान बजरंगी दंडी लिये हाथ में भुसंडी, अड़गी अनीते अनी। आये चौबीसों अवतार, सिद्ध चौरासी शुमार, नौ नाथों की यकसार, छवछाई थी घनी। कुछ लागी नहीं देर, परबत आये थे सुमेर आये वरुण व कुमेर, सारी माया के धनी। आये सूरज चन्द्र तारे,

पाचों तत्त भी वेचारे, तीनों गुण वहां पधारे, लेले हीरों की कनी। चारों वेद वह आये, नौओं ग्रहों को बुलाये, बारह मास आये पाये, पन्द्रह तिथि सजनी जी। शनी संभा के मन्त्री हो गये, विष्णु प्रधान बनाये ॥ नौ एक० ॥ १ ॥ विशनू बोले कोई आओ, दुख अपना सुनाओ, मत हम से छिपाओ, दिल खोल कहिये। सुन शिव जी पधारे, हाथ जोड़ के पुकारे, दुःख सुनियो हमारे, मैं विपत सही है, सारी उमर तप करूं, कबहुं ना विसरूं, मैं तेरा नाम सुमरूं, इस में कोई शक नहीं है। मेरो नार है पारवती, उस एक का मैं पती, और जन्म का मैं जती, ना सूरत गई है। फेर दुरगति मेरी, कैसी करते हैं अंधेरी, सारी लाज तार गेरी, ना शरम रही है। मुझको वैल पे चढ़ावें, और कामी करके गावें, मेरे लिंग को पुजावें, इज्जत लई है। मेरे गल हाड़ों की माला, हाथ खोपड़ियों का प्याला, लपटावें नाग काला, यह क्या थोड़ा भई है। बाजा डोरू का वजवावें, मेरे भिरड़ ततैया लावें, मुझको राख में लिटावें, क्या हतक नहीं है जी। वेलपत्रिका चढ़ें चढ़ावा क्या हम ऊंट ठहराये ॥ नौ एक दिन० ॥ २ ॥

दुर्गा बोली सुनियो स्वामी, तुम तो सब के अन्तरयामी जैसी मेरी बदनामी, ऐसी किसी की नहीं। मुझको कालका बतावें, धार मद्य की चढ़ावें मुझ पै पशु कटवावें, नाली खून की बही। मेरा भण्डारा रचावें, मुझ को अग्नि पे बुलवावें, मेरी जोत जलवावें क़दरावते के नहीं। जात छतीसों बुलावें, घर २ मैं डुलावे, पक्का सब को खिलावें, देख मैं कैसी कर दई। सारे काम करवावें, वैरी मुझ पै मरवावें, मुझपै हत्या करवावें, क्या मैं ऐसी निर्दई । मेरे कैसे हैं पुजारी, कहीं चूहड़ी क्या कुम्हारी, कहीं आप तिलक धारी, जगह २ धर दई। ब्रह्मचारिणी वतावें, पिंडी भग में गडावें, पापी नहीं शरमावें, सारी आबरू लई। तुमसे और क्या बताऊं, दुख जैसे २ पाऊं, मन्त्र

मोहनी पै जाऊं, क्या हो सोचो तो सही जी। माता २ करें अधर्मी सारे कौतुक कराये ॥ नौ एक दिन ॥ ३ ॥ सारे रहे थे विराज, लग रही थी समाज, वहां कृष्ण महाराज, भी यों कह रहे थे। मेरी सुनियो तमाम, जैसो मेरे पै इलज़ाम, मैंने ऐसे २ काम, कहा कब किये थे। क्या मैं ऐसा लुचा था, जैसी उड़ रही कथा, जैसा पोप ने लिखा, सुन फटे था हिया। झूंठी कथा ने नजीर, ये कैसी करी है तहक़ीर। मैंने गोपियों के चीर कब हर लिये थे। क्या मैं ऐसा व्यभिचारी, होके छाछ का भिकारी, उस चन्द्रावल विचारी के भवन गये थे। मेरी शूरवीरताई, सारी पोप ने छुपाई। उलटी तरह समझाई, जो कर्म किये थे। मेरी योग सुघराई, और नीति प्रभुताई, सारी पोप ने छुपाई, अन्त दिये थे, मुझ को लिखा चोर जार, चोरी जारी का सरदार, और असल गंवार, अनाचार किये थे जी। मेरे और मेरी प्राण प्यारी के भर २ सांग नचाये। नौ एक दिन० ॥ ४ ॥ बोले वाराह भगवान, सुनियों हे कृपानिधान, मेरी ओर करियो कान, मैं भी दुख पाऊं, सारे देवों का गुजारा, ठीक ठीक है विचारा, इक रहा मैं निसहारा, कहो कित जाऊं. जब उठता है थाल, बीच लड्डुं व सुबहाल, सारे खाय के निहाल, हो मैं पछताऊं। जब बाजती है ताल, चढ़े अच्छे २ माल, मेरा पूछता ना हाल, आंखें टपकाऊं। सब को भोग व विलास, मुझ को रखते हैं उदास, उनका जाय सत्यानाश, मैं तो यह चाहूं। तुम करियो जिकर, करें मेरा भी फ़िकर, न तो जायगा निकर जी मैं तो बबलाऊं। कुछ चाहिये नहीं, और कुछ पड़ता नहीं, ज़ोर एक करो ऐसी ठौर जो मैं समझाऊं। न तो जैसी किसे पियाई, एक रखदी तिसाई, उसको कहते हैं क़साई न मैं सुकचाऊं जी। सारे देखते मोटे ताजे हम किस कारण सुखाए ॥ नौ एक दिन० ॥ ५ ॥ दई गंगाजी ने दोही, मेरी सुनता नहीं कोई, मैं भी बुरी तरह डबोई, कहो कैसी मैं करूं। मेरे पिता कैलाशी, भोले

शम्भू अविनाशी, उनकी मेरी कैसी हांसी, कैसी धीर मैं धरूं। मुझ को कावड़ में ले आवें, शिव लिंग पै चढ़ावें, पापी नहीं शरमावें, मैं तो कहती भी डरूं। हाड़ बाल पूंछ लावें, लाकर मेरे पर चढ़ावें झूंठी सभा में उठावें, क्या मैं डूब के मरूं। आदर कूड़ी को भी है, पर ऐसी वे आदर की मैं, फिर सारे बोले मेरी जै, मैं सुन २ के जरूं। वहां हुआ गऊ का आना, मेरी सुनियो भगवाना, नहीं मुझको ठिकाना, क्या मैं कुए में पड़ूं। सुनकर देवों की पुकार, झुंझलाये करतार, बोले क्रोध हो अपार, कहो क्या सज़ा करूं। बोले मन्त्री कर टेक, इन पर भेज दो प्लेग, जीता बचे नहीं एक, यह मैं सच्ची उचारूं जी। सुन कर सोच किया विशनु ने दोनों तुरत बुलाये ॥ नौ एक दिन०॥ ६ ॥ बृहस्पति से कहा, ऋषी हो महा, देखो यह क्या हो रहा, जल्दी जाओ। लोग होगये हैं अनारी, कर रहे हैं ख्वारी, तुम बुद्धिमान भारी उन्हें समझाओ। करो वेद का प्रचार, छुटवादो दुराचार, सारे पुराने व्यवहार, वहां फैलाओ। यह है ऋषियों का काम, वहां करो सुख धाम, दुनियां में शुभ नाम, दयानन्द आओ। जाओ धारो करक दण्ड, करो धर्म को प्रचण्ड तोड़ो पाप का पाखण्ड, बीड़ा उठाओ। कैसे छाये हैं भ्रम, सारे छूट गये कर्म, दे दो वैदिकधर्म, देर मत लाओ। तुम ऋषी हो महान, तोड़ो काशी का गुमान, जिसमें भरा अभिमान, उसे मुरझाओ। रचो सत्यार्थप्रकाश, सब की करदो आश, करके पाखंड का नाश, जल्दी आओ जी। हरि आज्ञा सिर धारन करके स्वामी सृष्टि बीच आये ॥ नौ एक० ॥ ७ ॥

जोड़े प्लेग ने हाथ, मेरी सुनियो दीनानाथ, मैं भी निपट अनाथ, अरज़ कर रही हूं। समय घना गुज़रा मेरा, हाथ न पड़ा पेट भरा, मैं भूकी मर रहूं। करो मुझपै दया, मैं मानूं आपका कहा, वहां भख तैयार हो रहा, मैं झूटी नहीं हूं। जितने राक्षस लोग, सारे

मेरा भख भोग, आके लगा है संयोग, सच कह रही हूं। छोड़ खट बटिया, कहो करूं कटिया, जड़वादूं टटिया, मैं मौक़ा तक रहीहूं। विष्णु बोले हे हत्यारी, तूने क्या दिल में विचारी, दुनियां सूनी क्या हमारी, क्या मैं धनी नहीं हूं। जाओ एक काम करो पीछे ऋषि जी के फिरो, वहां पग देख धरो, मैं यह बताऊं सही हूं। कोई ऋषि की न माने, उसको कजाने जो कोई ऋषि को पहिचाने, उसके सिर पै मैं ही हूं जी। मिसल सभा की बस्तीराम को देकर नक़ल खंदाये ॥ नौ एक० ॥ ८ ॥

भजन

राग भैरवी ताल रूपक

प्रभु के मिल के यश गावें पिता वह ही हमारा है।
वही है पूज्य हम सब का वही सब का सहारा है॥
न महिमा उसकी का पाया किसी ने वारपारा है।
सकल ब्रह्माण्ड को रचकर उसी ने एक धारा है॥
जो है और हो चुका होगा उसी का सब पसारा है।
सभी के बस रहा अन्दर सभी से वह न्यारा है॥
वह ज्योतिमय ही केवल है तिमिर न अन्धकारा है।
उसी के दान से सूरज चमकता चन्द्र तारा है॥
वही है ज्ञान का सागर उसी में सत्य सारा है।
ज्ञानी सत्यवादी का वही मित्र प्यारा है॥
पवित्र शुद्ध है निर्मल वह शुद्धि करने हारा है।
धर्म का बल उसी से है वही बल का भण्डारा है॥
वह करुणा रूप है स्वामी उसी से ही उद्धारा है।
अधम अति पापियों को भी भरोसा उस पे भारा है॥
गंवाया जन्म को निष्फल उसे जिसने बिसारा है।
लगा चरनन में उसके जो जन्म उसने संवारा है॥

भुलावें क्यों भला उसको [illegible] हम सबों का है।
भजो निश दिन वही प्यारे कि जिसका सब पसारा है ॥

आरती

जय जगदीश हरे ॥ टेक ॥

भक्त जनन के सङ्कट छिन में दूर करे ॥१॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥२॥
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किस की।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी ॥३॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं मूर्ख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥५॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति ॥६॥
दीनबन्धु दुःखहर्त्ता तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥७॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥८॥
जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।